भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 15-09-2026

बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

सितम्बर माह में अब तक राज्य में 102.4 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो कि सामान्य से लगभग 5% ही कम है। हालाँकि जून से लेकर अब तक, राज्य में अब भी मानसूनी वर्षा में लगभग 35% की कमी बनी हुई है। बक्सर, गया, औरंगाबाद, सीवान, लखीसराय और खगड़िया को छोड़ कर, राज्य के सभी 32 जिलों में वर्षा की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, विशेषकर से शिवहर (**-62**%) में।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) पटना केंद्र के अनुसार, आने वाले 3 दिनों में राज्य के अधिकतम तापमान और आने वाले 5 दिनों में राज्य के न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। दिनाँक 16-17 सितम्बर में, उत्तर पश्चिमी बिहार, उत्तर मध्य बिहार और दक्षिण मध्य बिहार के जिलों में अनेक स्थानों पर मेघ-गर्जन/वज्रपात के साथ मध्यम से भारी स्तर की वर्षा की संभावना है। जबकि आगे के दिनों में राज्य में कुछ स्थानों पर हल्के स्तर (2.5-15.5 मिमी) की अथवा नाम मात्र ही वर्षा की संभावना है।

इस स्थिति में, खरीफ की फसलों को संभावित नुकसान से बचाने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- खेतों की मेड़ों की मरम्मत करें ताकि खेतों से होने वाले वर्षा/सिंचाई के जल के रिसाव को काफी हद तक कम किया जा सके।
- खेत को खरपतवार-मुक्त रखें और खरपतवार नियंत्रण हेतु पलवार (मल्चिंग) अथवा जहाँ संभव हो, कोनो-वीडर का यथा संभव प्रयोग करें।
- सब्जी वर्गीय फसलों में मल्चिंग (पलवार) का प्रयोग करें, इससे कम बारिश की स्थिति में खेत में उचित नमी बनाये रखने में मदद होती है और फसल को नुकसान कम होता है।
- खेत की सिंचाई तभी करें, जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें। खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गीला और सूखा' (AWD) सिंचाई पद्धति को अपनाएँ।
- कम वर्षा की स्थिति में जल संचयन संरचनाओं जैसे तालाब, रिचार्ज पिट आदि में संग्रहित जल का उपयोग सिंचाई के लिए करें।
- पानी की कमी के कारण, फसलों की वानस्पतिक वृद्धि के चरण में आने वाले तनाव जैसे सूखा या पोषण की कमी से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% (20 ग्राम प्रति लीटर पानी) यूरिया/ 2% पोटेशियम क्लोराइड / 1% (10 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम नाइट्रेट या एन:पी:के (15:15:15) के घोल का छिड़काव करें।
- धान के खेतों में, वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण- कल्ले फूटने की सक्रिय अवस्था पर एक सिंचाई अवश्य करें और इस अवस्था पर 25% अतिरिक्त नाइट्रोजन का उपरिवेशन करें।
- धान की फसल में, वृद्धि के अन्य महत्वपूर्ण चरणों जैसे बालियाँ बनना शुरू होना और फूल आना/ पुष्पन (सबसे संवेदनशील चरण) की अवस्था पर भी एक सिंचाई अवश्य करें।
- धान की प्रजनन वृद्धि के चरण जैसे बाली बनना/ निकालना और फूल आना/ पुष्पन की अवस्था में, पानी की कमी के कारण आने वाले तनाव (जैसे सूखा/पोषण की कमी) से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% (20 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम क्लोराइड / 0.5%-1% (5-10 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम नाइट्रेट के घोल का छिड़काव करें।

- पोषक तत्वों के नुकसान को कम करने के लिए, साफ मौसम में (मिट्टी में हल्की नमी की स्थिति में) फसल को नीम-कोटेड यूरिया का इस्तेमाल/ टॉप-ड्रेसिंग करें।
- बारिश या सिंचाई के बाद ही फसलों को पोषक तत्व दें और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने पर 0.5% (5 ग्राम प्रति लीटर पानी) जिंक सल्फेट का छिड़काव करें।
- संभावित सूखे की स्थिति में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें।